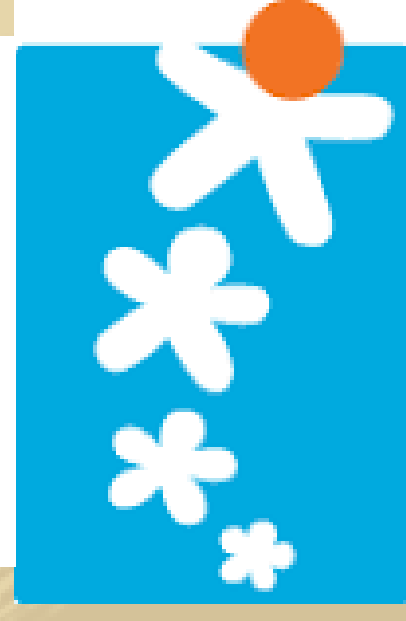


STOP

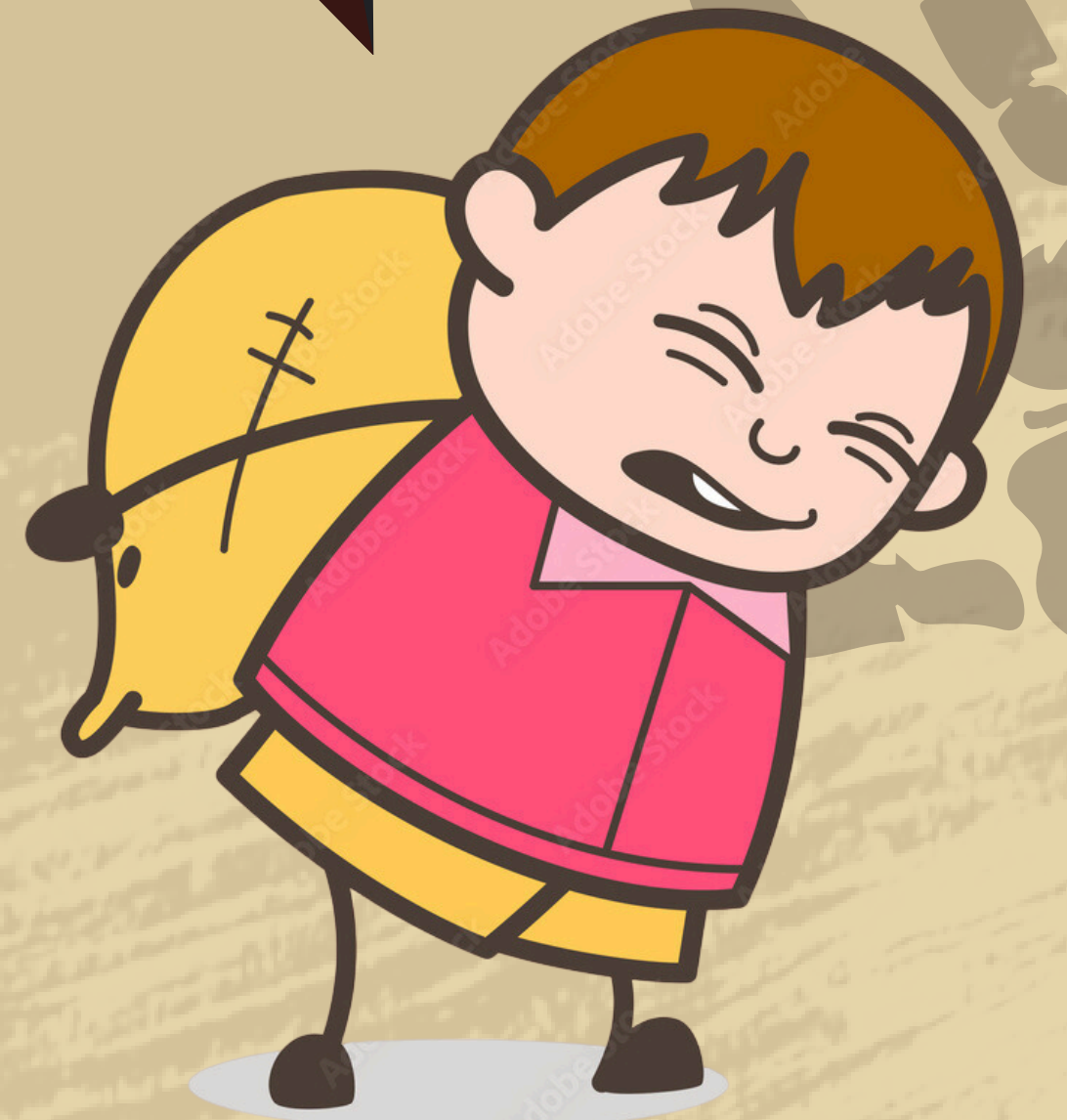
STOP Trafficking and Oppression of children & women



Azim Premji
Philanthropic
Initiatives

रमोला भर चैरिटेबल ट्रस्ट

बाल श्रम
पर हैंडबुक



RAMOLA BHAR CHARITABLE TRUST (Regd.)

Project: STOP

City Activity Centre: C-568, J.V.T.S. Garden, Road Number 5,
Chattarpur Extension, New Delhi- 110074, INDIA

Telephone: +91-9773500135

E-mail ID: stopglobalmovement@gmail.com

Website: <https://stopglobalmovement@gmail.com>

This publication is supported by STOP

This publication is for private circulation. Any part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means with due acknowledgment to STOP and UNDP. The viewpoints expressed in this publication are entirely those of the organization STOP.

First Published December 2023

पावती

बाल श्रम एक सामाजिक बुराई है जो समाज के सबसे कमजोर वर्ग का शोषण करती है; बच्चे। 2020 की शुरुआत में लगभग 160 मिलियन बच्चे बाल श्रम के अधीन थे, जिसमें 9 मिलियन अतिरिक्त बच्चे COVID-19 के प्रभाव के कारण जोखिम में थे। बाल श्रम के परिणामस्वरूप अत्यधिक शारीरिक और मानसिक क्षति हो सकती है, और यहां तक कि मृत्यु भी हो सकती है।

इससे गुलामी और यौन या आर्थिक शोषण हो सकता है। और लगभग हर मामले में, यह बच्चों को स्कूली शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल से वंचित कर देता है, उनके मौलिक अधिकारों को सीमित कर देता है और उनके भविष्य को खतरे में डाल देता है। तस्करी के शिकार बच्चों को अक्सर हिंसा, दुर्यवहार और अन्य मानवाधिकारों के उल्लंघन का शिकार होना पड़ता है। और कुछ को कानून तोड़ने के लिए मजबूर किया जा सकता है। लड़कियों के लिए, यौन शोषण का खतरा बड़ा होता है, जबकि लड़कों का सशस्त्र बलों या समूहों द्वारा शोषण किया जा सकता है। इस पुस्तिका के माध्यम से हमारा लक्ष्य बाल श्रम की कार्यप्रणाली, इसकी यथास्थिति और इससे निपटने के लिए जिम्मेदार कई कारकों का पता लगाना है।

प्रस्तावना



बाल श्रम एक सामाजिक बुराई है जो समाज के सबसे कमजोर वर्ग का शोषण करती है; बच्चे। 2020 की शुरुआत में लगभग 160 मिलियन बच्चे बाल श्रम के अधीन थे, जिसमें 9 मिलियन अतिरिक्त बच्चे COVID-19 के प्रभाव के कारण जोखिम में थे। बाल श्रम के परिणामस्वरूप अत्यधिक शारीरिक और मानसिक क्षति हो सकती है, और यहां तक कि मृत्यु भी हो सकती है।

इससे गुलामी और यौन या आर्थिक शोषण हो सकता है। और लगभग हर मामले में, यह बच्चों को स्कूली शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल से वंचित कर देता है, उनके मौलिक अधिकारों को सीमित कर देता है और उनके भविष्य को खतरे में डाल देता है। तस्करी के शिकार बच्चों को अक्सर हिंसा, दुर्व्यवहार और अन्य मानवाधिकारों के उल्लंघन का शिकार होना पड़ता है। और कुछ को कानून तोड़ने के लिए मजबूर किया जा सकता है। लड़कियों के लिए, यौन शोषण का खतरा बड़ा होता है, जबकि लड़कों का सशस्त्र बलों या समूहों द्वारा शोषण किया जा सकता है। इस पुस्तिका के माध्यम से हमारा लक्ष्य बाल श्रम की कार्यप्रणाली, इसकी यथास्थिति और इससे निपटने के लिए जिम्मेदार कई कारकों का पता लगाना है।

अंतर्वस्तु



विषय

पृष्ठ संख्य

बाल श्रम क्या है?

04

यथास्थिति

06

कारण

09

निवारण

11

रोकथाम

13



बाल श्रम क्या है?

- अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार, "बाल श्रम" शब्द को अक्सर ऐसे काम के रूप में परिभाषित किया जाता है जो बच्चों को उनके बचपन, उनकी क्षमता और उनकी गरिमा से वंचित करता है, और जो शारीरिक और मानसिक विकास के लिए हानिकारक है। यह उस कार्य को संदर्भित करता है जो:
- बच्चों के लिए मानसिक, शारीरिक, सामाजिक या नैतिक रूप से खतरनाक और हानिकारक है;
- और/या उनकी शिक्षा में हस्तक्षेप करता है: उन्हें स्कूल जाने के अवसर से वंचित करना; उन्हें समय से पहले स्कूल छोड़ने के लिए बाध्य करना; या उन्हें अत्यधिक लंबे और भारी काम के साथ स्कूल की उपस्थिति को संयोजित करने का प्रयास करने की आवश्यकता है।



- यूनिसेफ के अनुसार, बच्चों का उपयोग बाल श्रम के गंभीर रूपों जैसे बंधुआ मजदूरी, बाल सैनिक और तस्करी में किया जाता है। दक्षिण एशियाई बाल मजदूर विभिन्न उद्योगों में पाए जा सकते हैं: ईंट भट्टे, कालीन बुनाई, कपड़ा बनाना, घरेलू सेवा, कृषि, मत्स्य पालन और खनन। ILO का कन्वेंशन नंबर 182 श्रम के खतरनाक और नैतिक रूप से हानिकारक रूपों को परिभाषित करता है और उनके तत्काल और पूर्ण उन्मूलन का आह्वान करता है। दुनिया भर में, ILO का अनुमान है कि हर साल 22,000 बाल मजदूर काम के दौरान मारे जाते हैं। जैसा कि कन्वेंशन द्वारा परिभाषित किया गया है, बाल श्रम के सबसे खराब रूपों में शामिल हैं:

- गुलामी या इसी तरह की प्रथाएँ
- बच्चों का अवैध व्यापार
- सशस्त्र संघर्ष में जबरन भर्ती
- वेश्यावृत्ति और अश्लीलता
- नशीली दवाओं का उत्पादन और तस्करी
- ऋण बंधन
- जोखिम भरा काम

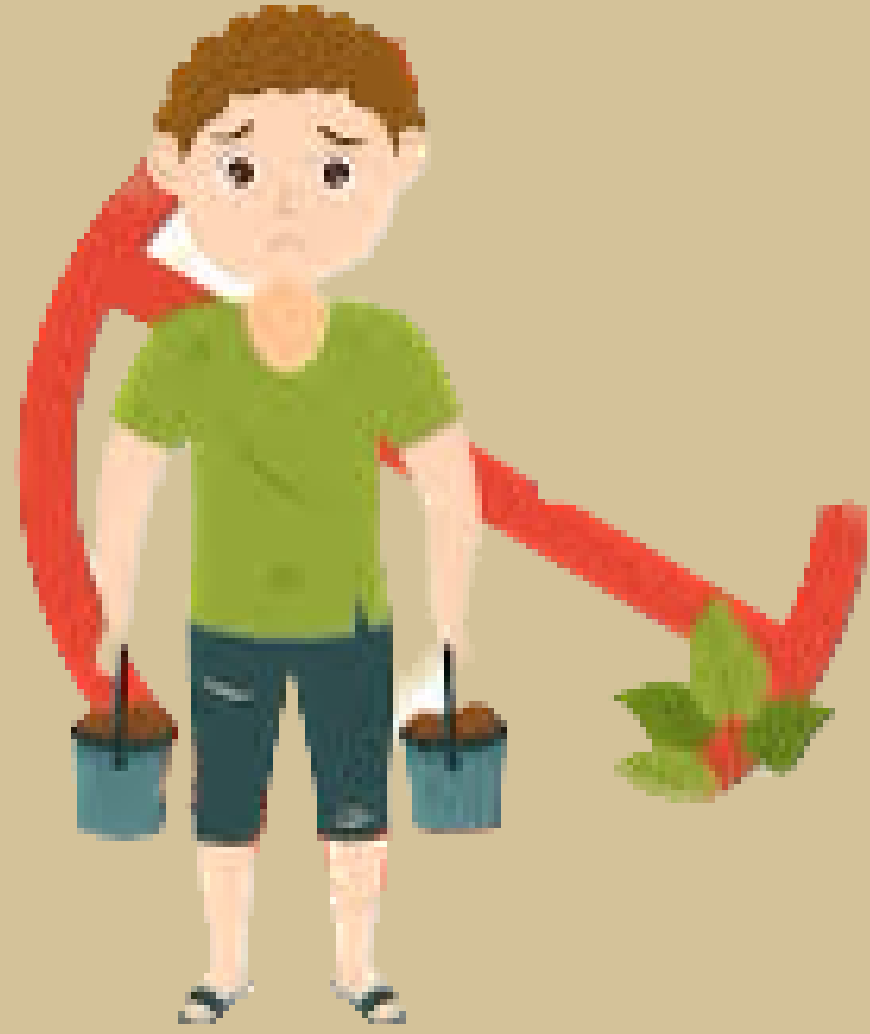


भारत में यथास्थिति

- अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) की 2015 की रिपोर्ट में वैश्विक स्तर पर 168 मिलियन में से भारत में 5 से 17 वर्ष की आयु के 5.7 मिलियन बाल श्रमिकों को दर्ज किया गया है। हालाँकि, जुलाई 2022 तक, राष्ट्रीय बाल श्रम परियोजना (एनसीएलपी) योजना के लिए अपर्याप्त बजटीय प्रावधानों के कारण केंद्र के पास देश में बाल श्रम पर कोई हालिया डेटा नहीं है। द हिंदू की रिपोर्ट है कि एकमात्र उपलब्ध डेटा 2011 की जनगणना से है, जो कहता है कि देश में दस लाख से अधिक बाल मजदूर हैं।

- बाल श्रम अधिनियम 2016 का अधिनियमन 14 वर्ष से कम उम्र के सभी बच्चों को रोजगार से प्रतिबंधित करता है। इस प्रकार यह कानून 2009 के शिक्षा अधिनियम के साथ फिट बैठता है, जो 14 वर्ष से कम उम्र के सभी बच्चों को मुफ्त शिक्षा का अधिकार देता है और माता-पिता को उन्हें स्कूल भेजने के लिए बाध्य करता है, जिन्हें हाल तक किसी भी तरह का काम करने की अनुमति थी। हालाँकि, 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए स्कूल के बाद 'पारिवारिक उद्यम' में काम करके अपने परिवार की मदद करने का प्रावधान त्रुटि की गुंजाइश छोड़ देता है। समीक्षकों का मानना है कि नया कानून वास्तव में बच्चों को स्कूल के समय से पहले और बाद में काम करने की अनुमति देकर स्थिति को और खराब कर देगा। विशेषज्ञों का कहना है कि यह खतरनाक व्यवसायों की सूची को पहले के 83 से घटाकर अब केवल तीन कर देता है: खनन, ज्वलनशील पदार्थ और खतरनाक प्रक्रियाएं।





- यूनिसेफ के अनुसार, बाल मजदूरों की संख्या अनुसूचित जाति (दलित) और अनुसूचित जनजाति (आदिवासी) में सबसे ज्यादा है, खासकर ग्रामीण इलाकों में कई बच्चे काम कर रहे हैं, लेकिन शहरों में बाल श्रम 'बच्चों के पलायन या तस्करी के कारण' बढ़ रहा है।



अवलोकन

- CRY द्वारा जनगणना आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि भारत में 7-14 वर्ष की आयु वर्ग के करीब 1.4 मिलियन बाल मजदूर अपना नाम नहीं लिख सकते हैं। इस प्रकार, इस आयु वर्ग के तीन बाल श्रमिकों में से एक निरक्षर है।
- गैर-लाभकारी संस्थाओं की रिपोर्ट है कि भारत के कीमती पत्थर काटने के क्षेत्र में कार्यरत 40 प्रतिशत श्रमिक बच्चे हैं। कठोर प्रतिबंध के बावजूद, कर्नाटक के बेल्लारी जिले में खनन उद्योग में उनका रोज़गार पुनः गिना जाता है। स्कूल से बाहर रहने पर लड़कियों द्वारा सफाई, खाना पकाने और सामान्य गृह व्यवस्था जैसे घरेलू काम करने की संभावना दोगुनी होती है। बचाए गए बाल श्रमिकों की खराब रिपोर्टिंग और पुनर्वास एक और बड़ी बाधा है।
- 2012 में एक आरटीआई के जवाब में यह खुलासा हुआ कि 2006-2008 के दौरान देश भर की राज्य सरकारों ने लगभग 10,000 बाल श्रमिकों को बचाने के बावजूद केवल 28 बच्चों को पुनर्वास लाभ प्रदान किया।



कारण

- 1** संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में बाल श्रम, जाति-आधारित भेदभाव और गरीबी आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं, जिनमें दक्षिण एशिया में दलित महिलाओं के खिलाफ गंभीर भेदभाव भी शामिल है, जिसके कारण उन्हें जीवन के सभी क्षेत्रों में विकल्पों और स्वतंत्रता से व्यवस्थित रूप से वंचित किया जाता है।
- 2** वे अक्सर ऐतिहासिक विरासतों का परिणाम होते हैं, जैसे गुलामी और उपनिवेशीकरण, विरासत में मिली स्थिति की प्रणालियाँ, और औपचारिक और राज्य-प्रायोजित भेदभाव।
- 3** रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि व्यवस्थित भेदभाव का प्रभावित व्यक्तियों और समुदायों की गरिमापूर्ण जीवन जीने और दूसरों के साथ समान स्तर पर मानवाधिकारों का आनंद लेने की क्षमता पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
- 4** हाशिए पर रहने वाले समुदायों को अक्सर सार्वजनिक नीतियों और राष्ट्रीय बजटीय आवंटन में नजरअंदाज कर दिया जाता है, और गुलामी के समकालीन रूपों सहित मानव अधिकारों के उल्लंघन के मामलों में न्याय और उपचार तक उनकी पहुंच आम तौर पर सीमित है।
- 5** रिपोर्ट में कहा गया है, "परिणामस्वरूप, ऐसे लोगों को विरासत में मिले व्यवसायों या अपमानजनक या खतरनाक काम को छोड़ने की सीमित स्वतंत्रता होती है और अक्सर न्याय तक पर्याप्त पहुंच के बिना ऋण बंधन के अधीन होते हैं।"

6 वर्ग, लिंग और धर्म जैसे अतिरिक्त अंतर्विरोधी कारक भी जातिगत वास्तविकताओं से प्रभावित होते हैं। दक्षिण एशिया में दलित महिलाओं को गंभीर भेदभाव का सामना करना पड़ता है, और परिणामस्वरूप, उन्हें जीवन के सभी क्षेत्रों में विकल्पों और स्वतंत्रता से व्यवस्थित रूप से वंचित किया जाता है।

7 इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च (आईजेएसआर) के एक अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि गरीबी, शिक्षा की कमी, सामाजिक और आर्थिक पिछड़ापन, लत-बीमारी या विकलांगता, सस्ते श्रम का लालच, लिंगवाद या यहां तक कि पारिवारिक परंपरा जैसे कई कारक हैं। बाल श्रम को सक्रिय रूप से कायम रखें।

8 गरीबी के कारण, माता-पिता अपने बच्चों की पढ़ाई का खर्च नहीं उठा सकते हैं और छोटी उम्र से ही उनसे मजदूरी नहीं करवा सकते हैं।

9 अशिक्षा के कारण कई बार माता-पिता को बच्चों की शिक्षा के लिए विभिन्न जानकारीयों और योजनाओं की जानकारी नहीं होती है और न ही

10 बाल श्रम का उनके बच्चों पर प्रभाव। गरीबी और बेरोजगारी की स्थितियाँ ग्रामीण परिवारों को बच्चों को विभिन्न कार्यों में संलग्न करने के लिए बाध्यकारी आधार प्रदान करती हैं।

11 छोटे व्यवसायी भी कम उत्पादन लागत में अपने पारिवारिक व्यापार को कायम रखने के लालच में अपने बच्चों का जीवन बर्बाद कर देते हैं।

निवारण

बाल श्रम के मामलों की रिपोर्ट करने के कई तरीके हैं। कुछ को नीचे सूचीबद्ध किया गया है:



पेंसिल पोर्टल

बाल श्रम न करने के लिए प्रभावी प्रवर्तन का मंच या पेन्सिल पोर्टल - एक ऑनलाइन मंच है जिसका उद्देश्य बाल श्रम को खत्म करने के लिए केंद्र सरकार, राज्य सरकार, जिला प्रशासन, नागरिक समाज और जनता को शामिल करना है ताकि मुक्त समाज के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। बाल श्रम का यहां आप पोर्टल पर बाल श्रम के खिलाफ शिकायत दर्ज कर सकते हैं।



चाइल्डलाइन इंडिया फाउंडेशन हेल्पलाइन

कॉल 1098 एक टोल-फ्री नंबर है और यह पूरे भारत में संचालित होता है। हेल्पलाइन नंबर चाइल्डलाइन इंडिया फाउंडेशन द्वारा संचालित है। यह मंच बाल अधिकार और बाल संरक्षण के लिए काम करता है। बाल श्रम के खिलाफ शिकायत करने के लिए नाबालिगों सहित लोग 1098 डायल कर सकते हैं।



जब कोई दिए गए हेल्पलाइन नंबर पर कॉल करेगा तो निम्नलिखित विवरण पूछे जाएंगे: बच्चे का नाम (यदि ज्ञात हो), आयु (एक अनुमान), बच्चे का विवरण। (भौतिक उपस्थिति), पता (यदि ज्ञात हो तो विशेष रूप से सटीक स्थान और आस-पास के स्थलचिह्न दें)।



पुलिस स्टेशन

सबसे त्वरित और प्रत्यक्ष समाधानों में से एक है बाल श्रम के खिलाफ शिकायत करने के लिए पुलिस से संपर्क करना। बाल श्रम के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने के लिए कोई सीधे अपने स्थानीय पुलिस स्टेशन जा सकता है या वे बस 100 डायल कर सकते हैं। एफआईआर दर्ज करते समय, शिकायतकर्ता को घटना के बारे में यथासंभव अधिक जानकारी देने का प्रयास करना चाहिए।



राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग

आयोग के मुख्य आदेशों में से एक बाल अधिकारों के उल्लंघन की शिकायतों की जांच करना है। आयोग को बाल अधिकारों के उल्लंघन के गंभीर मामलों का स्वतः संज्ञान लेने और बच्चों के अधिकारों के आनंद को बाधित करने वाले कारकों की जांच करने की भी आवश्यकता है। बाल श्रम के खिलाफ शिकायत किसी भी भाषा में की जा सकती है और इसके लिए कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा।

शिकायतों को संबोधित किया जा सकता है:

अध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग, 5वीं मंजिल, चंद्रलोक बिल्डिंग, 36, जनपथ, नई दिल्ली - 110 001

रोकथाम

1

बाल श्रम राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक विकास में एक गंभीर बाधा है। विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत बच्चे आवश्यक शिक्षा प्राप्त करने में विफल रहते हैं, वस्तुतः कठिनाई और गरीबी का जीवन जीने को मजबूर होते हैं। यह बच्चे के समग्र स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है, क्योंकि थके हुए बच्चे कठिन परिस्थितियों में लंबे समय तक काम करने के लिए शारीरिक रूप से फिट नहीं होते हैं। कांच और पटाखा उद्योगों में कार्यरत बच्चे न केवल लंबे समय तक काम करते हैं, बल्कि खतरनाक परिस्थितियों में भी काम करते हैं, जिससे उनके स्वास्थ्य के साथ गंभीर समझौता होता है, वे लगातार जहरीली गैसों और पदार्थों के संपर्क में रहते हैं, जिससे विभिन्न त्वचा और श्वसन संबंधी बीमारियां होती हैं।

2

कार्य के भविष्य के लिए एक नया मानव-केंद्रित एजेंडा। यह एजेंडा कार्रवाई के तीन स्तंभों पर केंद्रित है। सबसे पहले, इसका मतलब है लोगों की क्षमताओं में निवेश करना, उन्हें कौशल हासिल करने, पुनः कौशल और कौशल बढ़ाने में सक्षम बनाना और इसके माध्यम से उनका समर्थन करना। दूसरा, स्वतंत्रता, गरिमा, आर्थिक सुरक्षा और समानता के साथ काम का भविष्य सुनिश्चित करने के लिए कार्य संस्थानों में निवेश करना। तीसरा, सभ्य और टिकाऊ काम में निवेश करना और नियमों और प्रोत्साहनों को आकार देना ताकि आर्थिक और सामाजिक नीति और व्यावसायिक अभ्यास को इस एजेंडे के साथ संरेखित किया जा सके। ये निवेश वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए इक्विटी और स्थिरता के शक्तिशाली चालक हो सकते हैं।

3

बाल श्रम से निपटने के लिए दीर्घकालिक समन्वित कार्रवाई की आवश्यकता होती है जिसमें कई हितधारक और सरकार शामिल होती है। इसमें शैक्षणिक संस्थान, जनसंचार माध्यम, गैर सरकारी संगठन और समुदाय-आधारित संगठन के साथ-साथ सरकारी एजेंसियां भी शामिल हैं। यह महत्वपूर्ण है कि लोगों के दृष्टिकोण और मानसिकता को बदला जाए, बजाय इसके कि वयस्कों को रोजगार दिया जाए और सभी बच्चों को स्कूल जाने की अनुमति दी जाए और उन्हें सीखने, खेलने और सामाजिक मेलजोल का मौका दिया जाए जैसा कि उन्हें करना चाहिए।

4

शिक्षा बाल श्रम को रोकने की कुंजी है और यह भारत में बाल श्रमिकों को कम करने के सबसे सफल तरीकों में से एक है। इसमें स्कूली शिक्षा तक पहुंच का विस्तार करना, शिक्षा की गुणवत्ता और प्रासंगिकता में सुधार करना, स्कूलों में हिंसा को संबोधित करना, प्रासंगिक व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना और बाल श्रमिकों की स्कूल वापसी सुनिश्चित करने के लिए मौजूदा प्रणालियों का उपयोग करना शामिल है। वे हर जगह हैं लेकिन अदृश्य हैं, घरों में घरेलू नौकरों के रूप में मेहनत कर रहे हैं, बाल श्रम से निपटने के लिए दीर्घकालिक समन्वित कार्रवाई की आवश्यकता है जिसमें कई हितधारक और सरकार शामिल हैं। इसमें शैक्षणिक संस्थान, जनसंचार माध्यम, गैर सरकारी संगठन और समुदाय-आधारित संगठन के साथ-साथ सरकारी एजेंसियां भी शामिल हैं। यह महत्वपूर्ण है कि लोगों के दृष्टिकोण और मानसिकता को बदला जाए, बजाय इसके कि वयस्कों को रोजगार दिया जाए और सभी बच्चों को स्कूल जाने की अनुमति दी जाए और उन्हें सीखने, खेलने और सामाजिक मेलजोल का मौका दिया जाए जैसा कि उन्हें करना चाहिए। शिक्षा बाल श्रम को रोकने की कुंजी है और यह भारत में बाल श्रमिकों को कम करने के सबसे सफल तरीकों में से एक है।

5

इसमें स्कूली शिक्षा तक पहुंच का विस्तार करना, शिक्षा की गुणवत्ता और प्रासंगिकता में सुधार करना, स्कूलों में हिंसा को संबोधित करना, प्रासंगिक व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना और बाल श्रमिकों की स्कूल वापसी सुनिश्चित करने के लिए मौजूदा प्रणालियों का उपयोग करना शामिल है। वे हर जगह अदृश्य हैं, घरों में घरेलू नौकरों के रूप में मेहनत कर रहे हैं, कार्यशालाओं की दीवारों के पीछे काम कर रहे हैं, बागानों में दृश्य से छिपे हुए हैं। लाखों लड़कियाँ घरेलू नौकर और अवैतनिक घरेलू सहायिका के रूप में काम करती हैं और विशेष रूप से शोषण और दुर्व्यवहार की चपेट में हैं।

बाल श्रम उन्मूलन की दिशा में काम करने वाले चिंतित नागरिक के रूप में हमारे प्रयास में विविध प्रकार के साधन शामिल हो सकते हैं:

- बाल श्रम, इसके कारणों और परिणामों के बारे में खुद को शिक्षित करने से बाल श्रम के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए बेहतर जानकारी प्राप्त करने और सतर्क रहने में मदद मिलती है। व्यक्तिगत स्तर पर, इसमें सबसे पहले बच्चों के रोजगार को प्रोत्साहित करने वाली हमारी व्यक्तिगत प्रथाओं की जांच करना और उन्हें खत्म करना शामिल है।
- बाल श्रम पर वर्तमान सरकारी नीतियों के कार्यान्वयन की निगरानी करते हुए, बाल श्रम के खिलाफ अधिक कठोर कानून और न्यायिक कार्रवाई पर जोर देना।
- स्कूलों में बच्चों के नामांकन को बढ़ावा देना, विशेष रूप से निजी स्कूलों में, जो 2009 के शिक्षा के अधिकार अधिनियम के तहत कमजोर वर्गों और वंचित समूहों के बच्चों के लिए न्यूनतम 25% मुफ्त सीटें सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य हैं।

Image credits- DNA India



लक्षित उपाय

1. जागरूकता का निर्माण:

जन जागरूकता अभियान.C&ALPR अधिनियम की मुख्य विशेषताएं प्रदर्शित करना।

स्थानीय समुदाय स्तर पर प्रमुख सदस्यों को मुखबिर के रूप में कार्य करने और रिपोर्ट करने के लिए सशक्त बनाना।

पुलिस, न्यायपालिका जैसे हितधारकों के लिए स्कूलों, कॉलेजों में प्रशिक्षण स्थापित किया गया।

2.संस्थानों की क्षमता निर्माण:

सभी जिलों में जिला नोडल अधिकारी नियुक्त करना
प्रत्येक जिले में रोकथाम के लिए डीटीएफ का गठन एवं
कार्ययोजना का निर्माण
शिकायतों की ट्रैकिंग.

3.समन्वय एवं अभिसरण: •

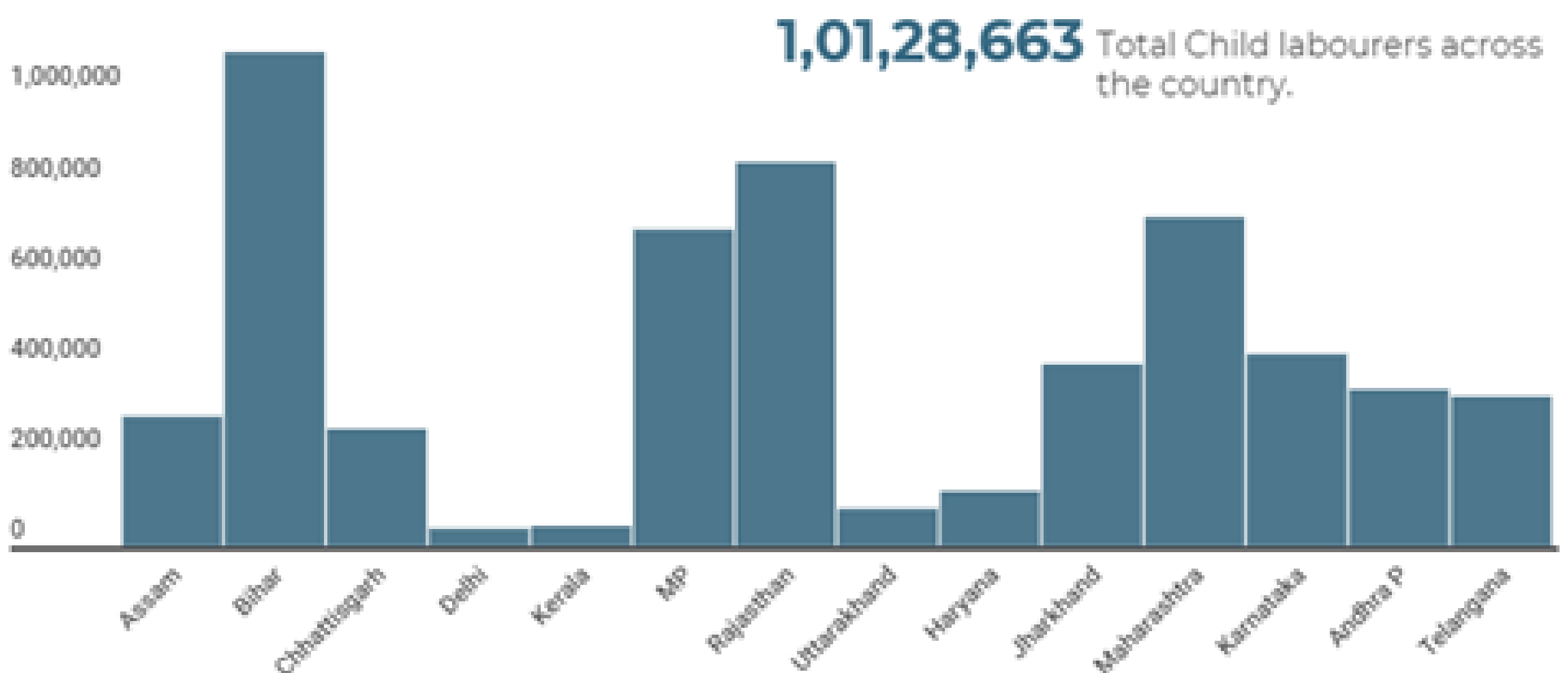
MoWCD के साथ राष्ट्रीय स्तर
DoSE&L बच्चों का नामांकन और प्रतिधारण
जिला और ग्राम स्तर पर बाल संरक्षण एजेंसियां और सुचारू
संचार प्रवाह
पुनर्वास के लिए सामाजिक न्याय विभाग और कौशल विकास
कार्यक्रम के साथ

4. ज्ञान प्रबंधन:

बाल श्रम, बंधुआ मजदूरी आदि पर सर्वेक्षणों का संकलन।
विभिन्न एजेंसियों से पेंसिल को जानकारी का लगातार प्रवाह
कार्यक्रमों को सूचित करने के लिए डेटाबेस पर जानकारी का विश्लेषण करना।
जीवित बचे लोगों से जानकारी एकत्र की जाएगी और आगे की रोकथाम के लिए उपयोग की जाएगी।

Child Labourers Across States Studied By KSCF

(As per Census 2011)



KSCF = Kailash Satyarthi Child Foundation

Source: **Census 2011**

Image- [source](#)